सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ0प्र0)-221001

बैठक	:	वाह्य शैक्षणिक अंकेक्षण समिति (External Academic Audit Committee)
स्थान	:	योग साधना केन्द्र
दिनाङ्क	:	24.01.2024
समय	:	02.00 बजे

पत्राङ्क संख्या कु.सं. 8966/2023 दिनाङ्क 10 सितम्बर, 2023 के द्वारा गठित वाह्य शैक्षणिक अंकेक्षण समिति (External Academic Audit Committee) एवं आदेश संख्या कु0स0 1367/2024 दिनाङ्क 19.01.2024 के आलोक में समिति की बैठक दिनाङ्क 24.01.2024 अपराह्न 02.00 बजे विश्वविद्यालय के योग साधना केन्द्र में सम्पन्न हुयी जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थिति हुए –

1.	प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी.।	
2.	प्रो. अमित कुमार शुक्ल, समन्वयक, नैक।	24.1.24
3.	प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी, पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, का.हि.वि.वि., वाराणसी।	
4.	प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री, ज्योतिष विभागाध्यक्ष, का.हि.वि.वि., वाराणसी।	24/1/24
5.	छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष।	24.1.24
6.	सहायक कुलसचिव (शैक्षिक), सचिव।	24/1/24

आन्तरिक एवं वाह्य सदस्यों द्वारा निम्न विभागों एवं सञ्चालित पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित पत्रजातों का गहन अवलोकन किया गया –

क्रम संख्या	सङ्काय	विभाग
1.	वेदवेदाङ्ग	वेद
2.		धर्मशास्त्र
3.		ज्योतिष
4.		व्याकरण
5.	साहित्य एवं संस्कृति	साहित्य
6.		पुराणेतिहास
7.		प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्र
8.	दर्शन	न्याय वैशेषिक
9.		सांख्ययोगतन्त्रागम
10.		पूर्वमीमांसा
11.		वेदान्त
12.		तुलनात्मक धर्म दर्शन
13.	श्रमणविद्या	बौद्ध दर्शन
14.		जैन दर्शन
15.		पाली एवं थेरवाद

24/1/24 24/1/24 24.1.24

16.		प्राकृत एवं जैनागम
17.		संस्कृत विद्या
18.	ज्ञानविज्ञान	आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान
19.		सामाजिक विज्ञान
20.		शिक्षाशास्त्र
21.		विज्ञान
22.		पुस्तकालय विज्ञान

सामान्य अवलोकन

1. सभी विभाग अपने Vision, Mission statements को तैयार रखें। ये विश्वविद्यालय के Vision, Mission statement के सहयोगी होने चाहिए। Programme Outcomes (POs) भी इसी के अनुरूप होना चाहिए।
2. PO-CO की mapping स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा वैश्विक आवश्यकतानुसार होनी चाहिए।
3. आई.क्यू.ए.सी. की सभी विभागों, अनुभागों तथा विभागों के साथ ससमय तारतम्य होना चाहिए।
4. सभी विभाग त्वरित परीक्षा परिणाम हेतु सजग रहें।
5. पाठ्यक्रमों के पुनरीक्षण में विश्वविद्यालय के नियमानुसार वांछित पत्रजात तैयार करें। आई.क्यू.ए.सी. एवं विभागों के मध्य डाटा के एकरूपता तथा आदान-प्रदान में तारतम्य की कमी।
6. पाठ्यक्रमों के पुनरीक्षण हेतु समय-सीमा निर्धारित हो तथा तय समय में इस प्रक्रिया को अनवरत सम्पन्न किया जाय।
7. विश्वविद्यालय में CBCS व्यवस्था पूर्ण रूप से लागू हो।
8. विगत पाँच वर्षों में प्रारम्भ नवीन पाठ्यक्रमों से समस्त को अवगत करायें। व्यापक प्रचार-प्रसार करें।
9. कार्यक्रमों की रूपरेखा विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर प्रदर्शित करें।
10. अध्यापकों के प्रकाशन का सम्पूर्ण विवरण भी वेबाईट पर अनवरत प्रदर्शित करें।
11. विभागों में Slow learners के उत्थान हेतु एक व्यवस्थित कार्यक्रम सुनिश्चित करें।
12. विभागों में Feedback हेतु एक व्यवस्थित कार्यक्रम सुनिश्चित करें।
13. पाठ्यक्रम के Course में Professional Ethics, Gender, Human Values, Environment and Sustainability को चिह्नित करें।
14. सभी विभाग समय-सारणी को तैयार रखें तथा उसमें मेण्टर-मेण्टी के मध्य होने वाली बैठकों का भी उल्लेख करें।

15. मेण्टर-मेण्टी के मध्य होने वाली बैठकों को अलग रजिस्टर में संरक्षित करें।
16. सभी विभाग समस्त अध्यापकगण हेतु एक फाईल तैयार रखने को कहें जिसमें निम्नलिखित अवश्य होनी चाहिए –
    (क) पाठ योजना।
    (ख) समय-सारणी।
    (ग) प्रश्नपत्र।
    (घ) परीक्षा परिणाम।
    (ङ) इत्यादि।
17. क्षेत्रीय भ्रमण परियोजना के समस्त पत्रजात सुव्यवस्थित होने चाहिए।
18. प्रत्येक विभाग को अपने alumni सम्बन्धित आकड़ों को व्यवस्थित रखना चाहिए।
19. पाठ्यक्रमों के पुनरीक्षण के पूर्व सम्बन्धित से फीडबैक अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।
20. MOUs से सम्बन्धित समस्त पत्रजात सुव्यवस्थित होने चाहिए।
21. value-added Course हेतु समस्त विभाग दिशा-निर्देश होना चाहिए।
22. Programme की भाँति Course की भी Coding होनी चाहिए
23. विश्वविद्यालय के संशाधन दिव्याङ्गजनों को ध्यान में रखकर व्यवस्थित करने चाहिए।
24. सभी विभाग अपनी विभागीय पत्रिका का प्रकाशन करें।

समस्त विभागों हेतु विशेष निर्देश

क्रम संख्या	सङ्काय	विभाग	निर्देश
1.	वेदवेदाङ्ग	वेद	देश के नैतिक मूल्यों के उत्थान में योगदान हेतु प्रयास।
2.		धर्मशास्त्र	आत्मानुशासन के द्वारा वैश्विक शान्ति में योगदान हेतु प्रयास।
3.		ज्योतिष	ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के द्वारा जन साधारण की समस्याओं के समाधान का प्रयास।
4.		व्याकरण	संस्कृत भाषा का उत्कृष्ट विधि से प्रदर्शन का प्रयास।
5.	साहित्य एवं संस्कृति	साहित्य	अत्यधिक मात्रा में छात्रों का प्रवेश, नाट्यशास्त्र के पाठ्यक्रम में समावेश की संभावना।
6.		पुराणेतिहास	संस्कृत के प्रमुख ग्रन्थों का ज्ञान।
7.		प्राचीनराजशास्त्रार्थशास्त्र	प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन।
8.	दर्शन	न्याय वैशेषिक	दुर्लभ विषय होने के कारण अत्यधिक ध्यान

			की आवश्यकता।
9.		सांख्ययोगतन्त्रागम	दुर्लभ विषय होने के कारण अत्यधिक ध्यान की आवश्यकता।
10.		पूर्वमीमांसा	दुर्लभ विषय होने के कारण अत्यधिक ध्यान की आवश्यकता।
11.		वेदान्त	अर्न्तविषयी अध्ययन तथा शास्त्रार्थ परम्परा को और अधिक सुदृढ बनायें।
12.		तुलनात्मक धर्म दर्शन	साम्प्रादायिक सद्भाव और धार्मिक सहिष्णुता में सहयोगी।
13.	श्रमणविद्या	बौद्ध दर्शन	विदेशी छात्रों को अधिक से अधिक आकर्षित करने की योजना।
14.		जैन दर्शन	दुर्लभ विषय होने के कारण अत्यधिक ध्यान की आवश्यकता।
15.		पाली एवं थेरवाद	विदेशी छात्रों को अधिक से अधिक आकर्षित करने की योजना।
16.		प्राकृत एवं जैनागम	अर्न्तविषयी अध्ययन की सम्भावना।
17.		संस्कृत विद्या	विदेशी छात्रों को अधिक से अधिक आकर्षित करने की योजना।
18.	ज्ञानविज्ञान	आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान	भाषा विज्ञान के अध्ययन को और अधिक सुदृढ़ करने की योजना।
19.		सामाजिक विज्ञान	नये पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने पर विचार।
20.		शिक्षाशास्त्र	नवीन परिवर्तनों को आत्मसात करने पर विचार।
21.		विज्ञान	नये पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने पर विचार।
22.		पुस्तकालय विज्ञान	पी.जी. एवं शोध कार्यक्रमों के प्रारम्भ करने पर विचार।

सुझाव

- समस्त अध्यापकगण प्रकाशन, पुस्तक लेखन इत्यादि की संख्या बढ़ायें।
- शोध संस्कृति का संवर्धन।
- छात्रों को रोजगार एवं समाज के उपयुक्त बनाने में विशेष ध्यान।
- भावी योजनाओं का निर्धारण।
- SWOC मूल्याङ्कन

24.1.24